पाठ–6
खानाबदोश

विधा – कहानी

कहानीकार – ओमप्रकाश वाल्मीकि

जीवन–परिचय –इनका जन्म सन् 1950 में बरला, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश में हुआ। उनका बचपन सामाजिक व आर्थिक कठिनाईयों में गुजरा। शिक्षा प्राप्त करने में उन्हें आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट झेलने पड़ें।

वाल्मीकि जी को डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार (1993) और 'परिवेश सम्मान' (1995) से सम्मानित किया जा चुका है।

रचनाएँ – कविता संग्रह – 'सादियों का संताप', 'बस! बहुत हो चुका।'

कहानी संग्रह– 'सलाम', 'घुसपैठिये'।

आत्मकथा – 'जूठन', 'दलित', 'साहित्यिक सौन्दर्यशास्त्र'

साहित्यिक विशेषताएँ– हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अपने लेखन में जातीय– अपमान शोषण और उत्पीड़न का वर्णन किया है।

पाठ–परिचय – इस सामाजिक समस्या–प्रधान कहानी के माध्यम से लेखक ने मेहनत मजदूरी करके किसी तरह गुज़र–बसर कर रहे मजदूर वर्ग के शोषण, यातना तथा समाज की जातिवादी मानसिकता का चित्रण किया है। मजदूर वर्ग मेहनत कर इज्जत से जीना चाहता है पर उच्च ताकतवर वर्ग ऐसा होने नहीं देता।

स्मरणीय बिन्दु – सुकिया और उसकी पत्नी मानो कमाने–खाने की इच्छा से गाँव–देहात छोड़कर शहर आए थे। वे असगर ठेकेदार के भट्टे पर ईंट पाथने का काम करते थे। भट्टे पर मोरी का काम सबसे खतरनाक था। ईंटें पकाने के लिए कोयला, बुरादा, लकड़ी और गन्ने की बाली को मोरियों के अंदर डालना होता था। छोटी–सी असावधानी मौत का कारण बन सकती थी। भट्टा मजदूरों को दड़बेनुमा छोटी–छोटी झोपड़ियों में रहना पड़ता था। संध्या के समय दिन–भर के थके–हारे मज़दूर रात को दड़बों में घुस जाते थे। साँप और बिच्छू का डर लगा रहता था तथा

वातावरण में जंगल का सा सन्नाटा छा जाता था। मानों भट्टे के माहौल से तालमेल नहीं बिठा पाई थी, इसलिए खाना बनाते समय चूल्हे से आती चिट–पिट की आवाजों में उसे अपने मन की दुश्चिंताओं और आशंकाओं की आवाजें सुनाई देती थी। मानों के मन में शारीरिक शोषण का डर, बात न मानने पर प्रतिकूल व्यवहार की घबराहट थी।

एक दिन भट्टा मालिक मुख्तार सिंह कहीं बाहर चला गया तो उसका बेटा सूबे सिंह भट्टे पर आने लगा । सूबेसिंह के भट्टे पर आने से भट्टे का माहौल बदल गया। ठेकेदार असगर उससे डरा–डरा रहने लगा। सूबेसिंह अपनी सेवा–टहल कराने के बहाने एक मजदूर महेश की पत्नी किसनी का यौन–शोषण करने लगा। उसने किसनी को साबुन, कपड़े और ट्रांजिस्टर लाकर दिया। वह किसनी को शहर भी घुमाने ले जाने लगा। किसनी खुश थी, वह सूबेसिंह के साथ अधिक समय व्यतीत करने लगी थी। उसके रंग–ढंग में परिवर्तन आ गया था। उसका पति महेश शराब पीने लगा था। उसे देखकर मजदूरों में फुसफुसाहट शुरू हो गई थी।

मानों और सुकिया खुश थे क्योंकि भट्टे पर काम करते हुए उन्होंने कुछ पैसे बचाए थे। भट्टे पर पकती लाल–लाल ईंटों को देखकर मानों खुश थी। वह ज्यादा काम करके, ज्यादा रुपये जोड़कर अपना एक पक्का मकान बनाने का सपना देखने लगी थी। एक दिन किसनी के अस्वस्थ होने पर सूबेसिंह ने ठेकेदार असगर के द्वारा मानों को अपने दफ्तर में बुलवाया। बुलावे की खबर सुनते ही मानों और सुकिया घबरा गए । वे सूबेसिंह की नीयत भाँप गए। मानों इज्जत की जिंदगी जीना चाहती थी। वह किसनी बनना नहीं चाहती थी। उनकी घबराहट देखकर जसदेव मानों के स्थान पर स्वयं सूबेसिंह से मिलने चला गया। सूबेसिंह ने जसदेव को अपशब्द कहे और लात–घूंसों से पिटाई कर दी। सुकिया और मानों उसे झोपड़ी में ले आए। जसदेव के इस अपनेपन के कारण मानों उसके लिए रोटी बनाकर ले गई, लेकिन ब्राह्मण होने के कारण उसने मानो की बनाई रोटी नहीं खाई । असगर ठेकेदार जसदेव को सुकिया और मानों के चक्कर में न पड़ने की सलाह देता है। जसदेव का व्यवहार मानों और सुकिया के प्रति बदलता चला जाता हें जसदेव की पिटाई से भट्टा मजदूरों में भय फैल जाता है।

सूबेसिंह की हिदायत पर असगर ठेकेदार सुकिया और मानों को तरह–तरह से परेशान करने लगा । उसने सुकिया से ईंट पाथने का साँचा ले लिया और मोरी का काम दे दिया। एक सुबह मानों ने अपनी ईंट पाथने की जगह पर सारी ईंट टूटी हुई देखीं। वह दहाड़े मारकर रोने लगी। आवाज़ सुनकर सुकिया वहाँ आया और टूटी ईंटे देखकर हक्का–बक्का रह गया। असगर ठेकेदार ने टूटी ईंटों की मजदूरी देने से साफ इन्कार कर दिया।

सुकिया सारी बात समझ गया और मानों का हाथ पकड़कर बोला कि 'ये लोग हमारा घर नहीं बनने देंगे।' वे लोग भट्टे को छोड़कर खानाबदोश की तरह किसी अनजान स्थान की ओर चल पड़े।

व्याख्या अभ्यास –

मानों का हृदय फटा.....लेना–देना ही न हो।

लेखक का नाम – ओमप्रकाश वाल्मीकि

पाठ का नाम – खानाबदोश

प्रसंग– इस कहानी में मज़दूरों के शोषण व यातना को चित्रित किया गया है। प्रस्तुत अंश में उस समय का चित्रण है जब मानों रात में पाथी गई अपनी ईंटों को सुबह टूटा–फूटा पाती है तो उसे उसका घर बनाने का सपना टूटता प्रतीत होता है इसीलिए .....

व्याख्या – उसका हृदय फटा जा रहा है। वह पागल–सी हो गई थी। उसका सपना किसी ने तोड़ दिया था। टूटी–फूटी ईंटों को देखकर उसे लगा कि किसी ने उसके पक्की ईंटों के मकान को तहस–नहस कर दिया हो। उसके कुछ देर बाद जसदेव वहाँ आया। वह भी निरपेक्ष भाव से चुपचाप खड़ा था। ऐसा लग रहा था कि उसे उन टूटी–फूटी ईंटों से कोई लेना–देना ही न हो। मजदूर होते हुए भी जातिगत आधार पर अपने को श्रेष्ठ या निम्न समझकर एक मजदूर दूसरे मजदूर की लड़ाई को अपनी नहीं समझता है तो ऐसे में शोषण मुक्त समाज की कल्पना भी दम तोड़ देती है। ऐसे में मानों का अस्थिर हो जाना स्वाभाविक था।

विशेष –

1. मानव–मनोविज्ञान पर लेखक की अच्छी पकड़ है। मानों की मनोदशा व जसदेव की तटस्थता का चित्रण।
2. 'हृदय फटना', 'बौरा जाना', आदि मुहावरों के प्रयोग से भाषा सजीव हो उठी है।
3. खड़ी बोली में भावों की सशक्त अभिव्यक्ति है।
4. भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है।
5. लेखक ने बड़ी हो बारीकी से मजदूर वर्ग के शोषण व उत्पीड़न का चित्रण किया है।

अभ्यास–प्रश्न (उत्तर सहित)

1. सूबेसिंह के सम्पर्क में आने पर किसनी के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

उत्तर– सूबेसिंह भट्टा मालिक मुख्तार सिंह का अय्याश बेटा था। उसने किसनी को दफ्तर की सेवा–टहल का काम दे दिया था। शुरू–शुरू में किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया था। धीरे–धीरे वह भट्टे पर गारे–मिट्टी का काम

छोड़कर रोज़ ही दफ्तर में रहने लगी थी। इससे किसनी के पास वे सब सुविधाएं आ गई, जिनकी अन्य मजदूर कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अब वह हैंडपंप के नीचे साबुन से रगड़–रगड़े कर नहाती थी। ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गानें सुनती थी तथा अच्छे कपड़े पहनती थी। वह अपने पति महेश की उपेक्षा करने लगी थी और ज्यादातर समय दफ्तर में खिलखिलाती रहती थी। वह सूबेसिंह के साथ शहर भी जाने लगी थी और कई–कई दिनों तक शहर से लौटती नहीं थी। जब लौटती–थकी, हारी, निढ़ाल और मुरझाई हुई। इससे वह अन्य मजदूरों में काना–फूसी का कारण बन गई थी। वह कुछ सुविधाओं के लिए शोषण और गर्त्त के ऐसे रास्ते पर चल पड़ी थी जहाँ से लौटना मुश्किल था।

2. 'खानाबदोश' कहानी की मूल संवेदना (भाव) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'खानाबदोश' कहानी की मूल संवेदना है– मजदूर वर्ग का शोषण। इस कहानी में लेखक ने मजदूरी करके किसी तरह गुजर–बसर कर रहे मजदूर वर्ग के शोषण तथा यातना को चित्रित किया है। मज़दूर यदि इज्जत के साथ जीना भी चाहे तो सूबेसिंह जैसे समृद्ध और ताकतवर लोग उन्हें जीने नहीं देते । हमारे समाज में व्याप्त जातिवादी मानसिकता भी समाज को बाँटनें में अहम् भूमिका निभाती है। शोषक वर्ग इसको एक हथियार के रूप में अपने पक्ष में प्रयोग करता है। शोषित वर्ग कभी भी अपने लिए कुछ नहीं कर पाता। वह तो रोजी–रोटी की समस्या में ही उलझकर रह जाता हैं इस कहानी में भी जमीन से उखड़े हुए लोगों की व्यथा को बताया गया है जो रोज़ी–रोटी कमाने की इच्छा में शोषण–चक्र में ऐसे फँस जाते हैं कि अजीवन खानाबदोशों जैसा जीवन जीने को विवश होकर रह जाते हैं।

3. 'खानाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन–किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है? इन समस्याओं के प्रति कहानीकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस कहानी में आज के समाज की निम्नलिखित समस्याओं को रेखांकित किया गया है–

1) समाज में जाति–भेद अभी तक कायम है।
2) मजदूर–वर्ग का शोषण हो रहा है और वे इस यातना को झेलने के लिए विवश हैं।
3) मजदूर अभी भी नारकीय जीवन जीते हैं। उनके लिए सुविधाओं का अभाव है।
4) समाज में स्त्रियाँ सुरक्षित नहीं हैं वे दोहरे शोषण की शिकार है स्त्रियों के लिए सम्मानजनक दृष्टिकोण का अभाव है।

5) समाज में शोषण को देखकर चुप रहने की मानसिकता व्याप्त है। इन समस्याओं के प्रति लेखक का दृष्टिकोण मानो और सुकिया के माध्यम से प्रकट हुआ हैं। दोनों अपना जीवन जीना चाहते हैं, परन्तु शोषणकारी शक्तियाँ उन्हें प्रताड़ित करती हैं वे शोषण के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं करते बल्कि कष्टपूर्ण जीवन झेलने के लिए कहीं और चल देते हैं वे खानाबदोश की जिंदगी जीने के लिए विवश है। कहानीकार के पास इस शोषण का कोई समाधान नहीं है। इतना अवश्य है कि वह शोषित और मजदूरवर्ग से गहरी सहानुभूति रखता है। पर वह कोई तर्कपूर्ण समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

व्याख्या–अभ्यास हेतु अनुच्छेद

क) भट्टे का काम खत्म.....पकवानों से अच्छी होती है।

ख) समूचा दिन अदृश्य.....आवाज भी नहीं आ रही है।

ग) कड़ी मेहनत और दिन–रात.....कितनी ईंटें लग जाती है।

घ) सुकिया के पीछे–पीछे.....एक दिशाहीन यात्रा पर।

ड़) भट्टे में उठते काले.....एक पड़ाव था वह भट्टा।

विचारणीय प्रश्न –

1. सुकिया और मानों भट्टे पर क्या काम करते थे?
2. मोरी का काम खतरनाक क्यों था?
3. संध्या के समय भट्टे का वातावरण कैसा हो जाता था?
4. मानों के मन की दुश्चिताओं और आशंकाओं को स्पष्ट करें।
5. सूबेसिंह के सम्पर्क में आने पर किसनी के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?
6. किसनी और सूबेसिंह के संबंधों को देखकर मजदूरों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?
7. सूबेसिंह ने जसदेव की पिटाई क्यों की?
8. जसदेव ने मानों का बनाया खाना क्यों नहीं खाया?
9. सूबेसिंह ने मानो और सुकिया को किस–किस तरह से परेशान किया?
10. आपके विचार से मानो द्वारा बनाई ईंटे किसने और क्यों तोड़ी होंगी?
11. मानों और सुकिया ने क्या सपना देखा था? वह सपना कैसे टूट गया?
12. 'खानाबदोश' कहानी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

13. 'खानाबदोश' कहानी की मूल–संवेदना अथवा भाव पर प्रकाश डालिए।

14. 'ईंटों को जोड़कर बनाए चूल्हे में जलती लकड़ियों की चिट–पिट जैसे मन में पसरी दुश्चिंताओं और तकलीफों की प्रतिध्वनियाँ थी जहाँ सब कुछ अनिश्चित था।' यह वाक्य मानो की किस मानसिक स्थिति को उजागर करता है?

15. 'सुकिया ने मानों की आँखों से बहते तेज अँधड़ों को देखा और उसकी किरकिराहट अपने अंतर्मन में महसूस की। सपनों के टूट जाने की आवाज उसके कानों को फाड़ रही थी।' प्रस्तुत पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

16. मानों किसनी क्यों नहीं बनना चाहती थी?

17. आशय स्पष्ट कीजिए –

    क) अपने देश की सूखी रोटी भी परदेश के पकवानों से अच्छी होती है।

    ख) फिर तुम तो दिन–रात साथ काम करते हो.....मेरी खातिर पिटे.....फिर यह बामन म्हारे बीच कहाँ से आ गया।

    ग) सपनों के काँच उसकी आँख में किरकिरा रहे थे।

18. भट्टा मजदूरों के बच्चों का जीवन कैसा होता है? उनकी शिक्षा व्यवस्था कैसे होती होगी? इस पर अपने विचार लिखे।